आरएएस अध्ययन नोट्स: लोक नृत्य, लोक संगीत, संगीत उपकरण

राजस्थान के लोक नृत्य

1. घूमर नृत्य

- यह नृत्य पारंपरिक होने के साथ उत्साह से भी भरा है।
- नृत्य के आसान होने के कारण हर आयुवर्ग की महिलाएं इस नृत्य में भाग लेती हैं।

यह नृत्य तब और भी सम्मोहित करता है जब नृत्य के दौरान महिलाओं के रंग-बिरंगे घाघरे लहराती हैं।

- इस परंपरा का विकास मूल रूप से भील जनजाति ने किया था, जिसे बाद में अन्य राजस्थानी समुदायों द्वारा अपना लिया गया।
- जयपुर पर शासन करने वाले राजपूतों के कच्छवाहा वंश ने भीलों को पराजित किया था और बाद में उनके साथ शांतपूर्वक संबंध बना लिए।
- आज यह पूरे राजस्थान में किया जाता है लेकिन उदयपुर, जोधपुर और कोटा-बूंदी में इसका प्रदर्शन विशेष रूप से किया जाता है।
- यह नृत्य भगवान शिव की पत्नी गौरी यानि पार्वती को समर्पित है।

2. कालबेलिया नृत्य

- इसे सपेरा नृत्य भी कहा जाता है।
- इसे राजस्थान की कालबेलिया जनजाति (घुमक्कड़ जनजाति) द्वारा किया जाता है। इस जनजाति के लोगों की मुख्य आजीविका सांपों को पकड़ना और उनके जहर का व्यापार करना है।
- पुरुष कई प्रकार के वाद्य यंत्र बजाते हैं जैसे पुंगी, डफली, मूरचांग, ढोलक, कंजरी और खुरालियो बजाते हैं और महिलाएं नृत्य करती हैं।
- महिलाएं मुख्य नृत्यक होती हैं जो सांप की चाल की नकल करती हुई नाचती और घूमती हैं।
- शरीर के ऊपरी हिस्से में महिलाएं 'अंगरखा' पहनती हैं और सिर पर वे 'ओढ़नी' डालती हैं।
- इसकी लोकप्रियता के कारण, इसे यूनेस्को द्वारा वर्ष 2010 से मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल किया गया था।

3. भवाई नृत्य

- यह एक काफी मुश्किल नृत्य है जिसे सिर्फ पारंगत नृत्यक ही कर सकते हैं। इस नृत्य में, महिला नृत्यक अपने सिर पर 8 से 9 घड़ों का संतुलन बनाकर नृत्य करती हैं और कांच अथवा कभी-कभी नंगी चाकूओं की धार पर अपनी अपने ऐढ़ी के बल पर झूमती व नाचती हैं।

- इस नृत्य की शुरूआत गुजरात में हुई थी और जल्द ही इसे राजस्थान की स्थानीय जनजाति के पुरुषों और महिलाओं द्वारा अपना लिया गया।
- मुख्यतः इस नृत्य को राजस्थान की जाट, भील, रैगर, मीना, कुम्हार और कालबेलिया समुदायों द्वारा किया जाता है।
- प्रमुख वाद्य यंत्र :- ढोलक, झांझर, पखवाजा, सारंगी और हार्मोनियम (पृष्ठभूमि संगीत में बनाए जाते हैं)।
- सरकार लोक नृत्य के तेजी से मरती इस नृत्य शैली को बचाने की हर संभव कोशिश कर रही है।

4. कथपुतली नृत्य

- यह एक विश्वप्रसिद्ध नृत्य है और इसे गुड़िया नृत्य भी कहा जाता है।
- यह समाज की सामाजिक समस्याओं और पौराणिक कहानियों और लोक कथाओं को दिखाती और समझाती हैं।
- प्राचीन काल में इस कला का अभ्यास भाटी समुदाय द्वारा किया जाता था और शायद इसका उदय नागपुर और उसके आसपास के क्षेत्र में हुआ होगा।
- कठपुतली नचाने वाला धागों के साथ तलवारबाजी, नृत्य, घोड़े की सवारी, जादू और कलाबाजियां करके अपना हुनर दिखाते हैं।

5. तेरह ताली

- इसकी शुरूआत उन महिलाओं ने की, जो जमीन पर बैठती हैं और उनके शारीरिक अंग मंजीरों से जुड़े होते हैं जो उनकी कलाईयों, कंधों, कोहनियों, भुजाओं, दोनों हाथों पर बंधी होते हैं और साथ ही उनके साथी लयताल में धीमे-धीमे गाते हैं।
- नृत्यक अपने हाथों से विभिन्न कलाबाजियां करते हैं और नृत्य को आकर्षक बनाने के लिए अपने सिर पर घड़े रखते हैं और मुंह में तलवार दबाते हैं।
- इस नृत्य का प्रदर्शन मुख्य रूप से कमड़ा जनजाति द्वारा किया जाता है जो पारंपिरक सपेरे होते हैं। इनके अलावा यह नृत्य मिरासी, भांड, धोली, भाट और नट जनजाति द्वारा किया जाता है।
- पुरुष कलाकार पृष्ठभूमि संगीत के रूप में स्थानीय राजस्थानी लोक गीत गाते हैं और विभिन्न वाद्य यंत्र जैसे पखवाजा, झांझर, सारंगी, हार्मोनियम इत्यादि बजाते हैं।

6. ड्रम नृत्य

- यह राजस्थान के जालौर क्षेत्र का पेशेवर नृत्य है, जिसमें केवल पुरुष कलाकार ही भाग लेते हैं।
- पृष्ठभूमि संगीत को अधिक मनमोहक बनाने के लिए अन्य पीटने वाले वाद्य यंत्रों का इस्तेमाल होता है।
- आवाज के बढ़ने के साथ, नृत्यकों की रफ्तार भी तेज होती है जिससे यह और भी आकर्षक लगता है।

- इस नृत्य को किसी भी अवसर पर किया जा सकता है।

7. कथक

- कथक शब्द की उत्पत्ति कथा शब्द से हुई है जिसका अर्थ कथा है जो मुख्यतः गाथाओं, कहानियों और लीजेंड पर आधारित होती है।
- इस प्रकार कथक सुंदर नृत्य के द्वारा कथा गान की एक कला है।
- पृष्ठभूमि संगीत को तबला, सारंगी और सितार आदि के द्वारा बजाया जाता है।
- इसका विकास भारत के एक विख्यात घराने जयपुर घराने ने किया था।
- पहले कथक का प्रदर्शन मंदिरों में भगवान की पूजा के लिए होता था लेकिन आजकल इसका प्रदर्शन मनोरंजन उद्देश्य के लिए किया जाता है।
- इसकी दो मुख्य तकनीक हैं : नृत्य का शुद्ध अर्थ नाच और अभिनय है।
- नृत्य में, नृत्यक पैरों की कदमताल पर ध्यान देते हैं और अभिनये चेहरे के हावभाव पर ध्यान देते हैं।

8. चकरी नृत्य

- चकरी का नृत्य चक्कर से सम्बंधित है।
- यह नृत्य कोटा और बुरण जिले में रहने वाली कंजर जनजाति का सबसे प्रसिद्ध लोक नृत्य है और यह नृत्य उनकी रोजी-रोटी का मुख्य साधन भी है।
- यह राजस्थान के हरोती क्षेत्र में लगभग सभी अवसरों पर किया जाता है।
- इसे मध्य प्रदेश की 'बेरिया' जनजाति के राई नृत्य के समान ही माना जाता है।
- प्रमुख वाद्य यंत्र :- आवाज के साथ ढोलक और नगाड़ा

9. अग्नि नृत्य

- यह नृत्य बंजारा समुदाय द्वारा किया जाता है जो राजस्थान के बीकानेर और चुरू जिले के जसनाथी की जीवनशैली को प्रदर्शित करते हैं।
- यह जलती हुई लकड़ी और चारकोल के चारों और किया जाता है।
- नृत्यक आग के सामने ऐसे खतरनाक करतब दिखाते हैं जैसे उन्हें दैवीय शक्तियों का वरदान प्राप्त हो।
- नृत्यक प्रायः आग से जलती हुई दो लकड़ियों को हाथ में पकड़े होते हैं और उनके मुंह में केरोसीन भरा होता है और नाचते हुए वे केरोसीन को जलती लकड़ी पर डालते हैं।
- ताल बढ़ने के साथ ढोल, ढोलक और नगाड़ा को अग्नि नृत्य के साथ बजाया जाता है।
- इसे राजस्थान में त्योहार के अवसर पर सर्दी की रातों में मरुस्थलीय क्षेत्रों में किया जाता है।

10. कच्ची घोड़ी नृत्य

- इसका उदय शेखावती के डकैत क्षेत्रों में हुआ था।
- यह नृत्य नकली घोड़ों पर बैठकर पुरुषों द्वारा किया जाता है।
- पुरुष लाल पगड़ी, धोती और कुर्ता पहनते हैं और सजे हुए नकली घोड़ों पर नाचते हैं।
- यह नृत्य पुराने दिनों में सामान के आवागमन और युद्ध में घोड़ों के महत्व को दर्शाने के लिए किया जाता है। क्योंकि घोड़ों का प्रयोग उन दिनों में राजशाही ताकत दिखाने के लिए किया जाता है।
- यह नृत्य वावरिया जनजाति के डाकुओं का राहगीरों के साथ सामना होने का वर्णन करता है।

11.ख्याल नृत्य

- ख्याल का अर्थ 'विचार' है।
- इसका उदय जाट समुदाय से माना जाता है।
- इसका प्रदर्शन राजस्थान की भवाई जनजाति द्वारा किया जाता है।
- यह नृत्य और धर्म का संयोजन है जो मजाकिया और मसखरे चरित्र दिखाती है।
- यह नृत्य हिन्दु महाकाव्यों की पृष्ठभूमि पर आधारित है।

12.गेर नृत्य

- यह राजस्थान के भील समुदाय में प्रसिद्ध है।
- पुरुष और महिलाएं दोनों एक साथ यह नृत्य करते हैं।
- पुरुष एक बड़े गोले में हाथ में लकड़ी की छड़ी लेकर नाचते हैं और पृष्ठभूमि में ढोल, नगाड़े और ढोलक की थाप के साथ बजने के साथ छड़ी को पीटते थे।
- यह होली और जनमाष्टमी के अवसर के दौरान किया जाता है।

13.चरी नृत्य

- यह राजस्थान के गुज्जर समुदाय से संबंधित है और यह नृत्य केवल महिलाएं ही करती हैं।
- इस नृत्य में महिलाएं अपने सिर पर पीलत के मटके रखती हैं और फिर बर्तन में जलता दिया रख दिया जाता है।
- यह नृत्य रात में समूह में किया जाता है और बहुत ही आकर्षक लगता है।
- इसमें बर्तनों को संतुलित करने के अलावा कोई खास स्टेप नहीं है।
- नृत्य के दौरान महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले प्रमुख कपड़ों में हंसली, तिमनिया, मोगरी, पंची, बंदगी, घाघरा, बाजूबंद, कार्ली, तंका और नवर है।
- प्रमुख वाद्य यंत्र :- ढोल, ढोलक, बंकिया, हार्मोनियम, नगाड़ा और थाली।
- यह मुख्यतः शादी विवाह, लड़के के जन्म और बड़े महोत्सव के दौरान किया जाता है।

14.गवरी नृत्य

- यह भील जनजाति में प्रसिद्ध है।

- यह एक धार्मिक नृत्य है जो वाणी के द्वारा गांव-गांव तक जाता है।
- गवरी नृत्य के कुछ प्रमुख चरित्र राय बुरिया शिव, उनके दो बेटे और मसखरा उस्ताद कठुरिया है।

15.वालर नृत्य

- यह गरासिया जनजाति में प्रसिद्ध है।
- यह प्रसिद्ध घूमर नृत्य का प्रकार है।
- गरासिया जनजाति मुख्य रूप से दक्षिणी राजस्थान में निवास करती है।
- इसमें महिलाएं मंडल, चांग और कई अन्य प्रकार के वाद्य यंत्रों पर गोल घूम-घूमकर नृत्य करती हैं जिससे उनके नृत्य कदमताल को एक जीवंत लयताल देती है।

राजस्थान के लोग गीत

- **राजस्थान के लोकगीत गायन**

1. मांड

- गायन की इस शैली का विकास जैसलमेर जिले में हुआ था जिसका पुराना नाम मांड था।
- 'केसरिया बालम' इस शैली का सबसे प्रसिद्ध गीत है।
- प्रख्यात गायक – अल्लाह जिल्लाई बाई, गावरी बाई, मंगी बाई आदि।

2. मांगनियार

- यह जैसलमेर और बारमेड़ क्षेत्र में मांगनियार जनजाति द्वारा विकसित किया गया है।
- प्रख्यात गायक – सादिक खान, साकर खान आदि।

3. लांगा

- यह जैसलमेर और बारमेड़ क्षेत्र में लांगा जनजाति द्वारा विकसित किया गया है।
- यह शैली अपने लिंबुदा गीत के लिए प्रसिद्ध है।
- प्रमुख वाद्य यंत्र : कामायचा और सारंगी

4. तालबंदी

- यह करौली, सवाई माधोपुर और भरतपुर क्षेत्रों में संतों द्वारा विकसित किया गया है।
- प्रमुख उपकरण – नागड़ा

राजस्थान के लोकगीत वाद्य यंत्र

क्रमांक	वाद्य यंत्र का नाम	मुख्य बिंदु
1.	अलगोजा	यह राजस्थान का राज्य वाद्य यंत्र है। यह मुख्यतः जैसलमेर, जोधपुर, बारमेड़, जयपुर, सवाई माधोपुर और टोंक जिले के क्षेत्रों में बजाया जाता है। इसका अधिकांश प्रयोग भील और कालबेलिया जनजाति के लोग करते हैं।
2.	इकतारा	यह एक तार वाला वाद्य यंत्र है। यह कालबेलिया और संतों द्वारा बजाया जाता है।
3.	कामायचा	यह जैसलमेर और बारमेड़ क्षेत्र में प्रसिद्ध है। मुख्यतः मुस्लिम शेख इसका प्रयोग करते हैं जिन्हें मांगनियार कहते हैं।
4.	करथल	सादिक खान एक प्रसिद्ध करथल वादक हैं। यह भक्तों और संतों द्वारा बजाया जाता है।
5.	चांग	यह शेखवटी क्षेत्र में होली के दौरान बजाया जाता है। यह कालबेलिया जनजाति द्वारा बजाया जाता है।
6.	जंतर	यह देवनारायण के भजनों के दौरान बजाया जाता है। यह मुख्यतः मारवाड़ क्षेत्र में बजाया जाता है।
7.	झांझ	यह शेखावटी क्षेत्र में प्रसिद्ध है। इसे तासा के साथ कच्ची घोड़ी नृत्य के दौरान बजाया जाता है।
8.	ढोल	इसका मुख्यतः प्रयोग भीलों के गेर नृत्य, कच्ची घोड़ी नृत्य और जालौर के ढोल नृत्य में किया जाता है।
9.	तंदूरा	यह एक चार तारों वाला वाद्य यंत्र है जिसे चौतारा भी कहा जाता है।
10.	ताशा	यह मुस्लिम लोगों द्वारा अधिकांश बजाया जाता है।
11.	नगाड़ा	इसे शहनाई के साथ लोक नाटकों के दौरान बजाते हैं। इसका मुख्य प्रयोग युद्ध के समय में किया जाता था।

12.	पुंगी	यह एक बांसुरी नुमा उपकरण है जिसके दो सिरे होते हैं। यह कालबेलिया और भील जनजाति का प्रसिद्ध वाद्य यंत्र है।
13.	भापांग	यह मेवात क्षेत्र का प्रसिद्ध वाद्य यंत्र है। जौहर खां प्रसिद्ध भापांग वादक हैं।
14.	मंजीरा	यह डुंगरपुर क्षेत्र में प्रसिद्ध है। इसका प्रयोग तेरह ताली नृत्य में किया जाता है।
15.	मशक	यह मुख्यतः भैरू जी भोपे (पुरुष गायक) में होता है।
16.	माडल	इसे भील लोग गावरी नृत्य के दौरान बजाते हैं।
17.	रावनहट्टा	यह पुरुष गायकों (भोपे) का मुख्य वाद्य यंत्र है।
18.	शहनाई	शहनाई की नली में 8 छेद होते हैं। मांगी बाई प्रसिद्ध शहनाई वादक हैं। इसका वादन मुख्यतः शुभ समारोह में होता है।
19.	सारंगी	इसका प्रयोग बारमेड़ और जैसलमेर क्षेत्र की लांगा जनजाति द्वारा किया जाता है। मिरासी, लांगा, जोगिस, मांगनियार आदि गायन के दौरान इस वाद्य यंत्र को बजाते हैं।